सुभाषित साहित्य में चित्रित जन–जीवन

डॉ. नौनिहाल गौतम*

आदि काव्य रामायण से प्रारम्भ हुई संस्कृत काव्य धारा वर्तमान तक सतत रूप से प्रवहमान है। प्रारम्भ में इसके अन्तर्गत प्रबन्ध काव्य ही प्रायः मिलते हैं, किन्तु परवर्तीकाल में सातवीं शताब्दी से मुक्तकों की रचना होने लगी थी। इन मुक्तकों में भावाभिव्यक्ति की क्षमता अद्‌भुत थी। एक ही श्लोक में रस और भाव उसके महत्त्व को बढ़ा देने वाले सिद्ध हुए। इसी कारण प्रसिद्ध काव्यशास्त्री आनन्दवर्धन ने माना कि अमरूक कवि का तो एक–एक पद्य ही एक–एक प्रबन्ध की तरह है। तद्यथा– *'अमरूकस्य कवेर्मुक्तकाः शृङ्गाररसस्यन्दिनः प्रबन्धायमानाः प्रसिद्धा एव'* [1]

इन मुक्तकों की लोकप्रियता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि इनके रचनाकारों की संख्या बहुत है और वे भिन्न भिन्न परिवेशों से जुड़े हुए हैं। ग्राम या नगर के निवासी, प्रसिद्ध या अप्रसिद्ध, राजाश्रित या बिना राजाश्रित, सभी ने मुक्तकों की रचना की है। इस कारण मुक्तकों की संख्या भी बहुत अधिक प्राप्त होती है। इन मुक्तकों में से श्रेष्ठ मुक्तकों को चुन कर कई विद्वानों ने सुभाषित संग्रह तैयार किये। इनमें 11वीं शताब्दी में विद्याकर पण्डित द्वारा संकलित 'कवीन्द्र वचन समुच्चय' पहला सुभाषित संग्रह माना जाता है। इसके अतिरिक्त भी कई अन्य सुभाषित संग्रह प्राप्त होते हैं।

सुभाषित साहित्य– प्रमुख सुभाषित संग्रह एवं संकलनकर्ताओं की नामावली प्रस्तुत है– कवीन्द्रवचनसमुच्चय– विद्याकर पण्डित (11वीं शती), अभिलषितार्थचिन्तामणि– सोमेश्वर (1131 ई.), आर्यासप्तशती– गोवर्धनाचार्य (1169 ई.), सदुक्तिकर्णामृत – श्रीधरदास (13 वीं शती), सुभाषितमुक्तावली– जल्हण, सूक्तिरत्नाकर– सिद्धचन्द्रमणि, सुभाषितसुधानिधि– सायणाचार्य, शाङ्गर्धरपद्धति, सूक्तिरत्नाकर – कलिंगराय, सुभाषितावली– वल्लभदेव, सुभाषितावली– सकलकीर्ति, सुभाषितावली– श्रीवर, सूक्तिमुक्तावली– सोमप्रभाचार्य, सुभाषितरत्नसन्दोह– अमितगति, पद्यावली– रूपगोस्वामी, सुभाषितहारावली– हरिकवि, पद्यतरङ्गिणी– व्रजनाथ, पद्यवेणी–वेणीदत्त, सूक्तिमालिका– नारोजीपण्डित, पद्यरचना– लक्ष्मणभट्ट, बुधभूषण– शिवाजी के पुत्र शम्भू, सुभाषितरत्नभाण्डागार– शिवदत्त, संस्कृतसूक्तिरत्नाकर– रामजी उपाध्याय, वेदसूक्तिमाला– धर्मेन्द्रकुमार सिंहदेव इत्यादि। कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने भी सुभाषित संग्रह प्रकाशित करने में महत्त्वपूर्ण

***सहा. प्राध्यापक संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) 470003**

कार्य किया है, जिनमें से बॉटलिंक तथा प्रो. लुडविक स्टर्नवाख के नाम उल्लेखनीय हैं।[2] इस प्रकार संस्कृत के विपुल साहित्य में सुभाषित साहित्य पर्याप्त मात्रा में विद्यमान है।

सुभाषित साहित्य का महत्त्व – कम शब्दों में अपनी सटीक अभिव्यक्ति से सुभाषित पाठक और श्रोता को आकर्षित कर लेते हैं। इनसे मिलने वाली शिक्षा भी ग्राह्य होती है। एक ही पद्य में उपदेश इस तरह से निबद्ध होता है कि उचित और अनुचित, महत्त्वपूर्ण और महत्त्वहीन, करणीय और अकरणीय आदि की उपलब्धि हो जाती है। जैसे उचित स्थान पर रहने से महत्त्व मिलता है और उचित स्थान पर न रहने से महत्त्व नहीं मिलता है, इसका निरूपण निम्नलिखित पद्य में कितनी सुन्दरता से प्रस्तुत किया गया है–

राजा कुलवधूर्विप्रा मन्त्रिणश्च पयोधराः।
स्थानभ्रष्टा न शोभन्ते दन्ताः केशा नरा नखाः।।[3]

सुभाषितसाहित्य में भी सुभाषित की प्रशंसा प्राप्त होती है। भाषाओं में संस्कृत श्रेष्ठ है, संस्कृत में भी काव्य मधुर हैं, काव्यों में भी सुभाषित वरेण्य हैं। तद्यथा–

भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती।
तस्माद्धि काव्यं मधुरं तस्मादपि सुभाषितम्।।[4]

सुभाषितसाहित्य लोक को दिशा देता हुआ भी दीख पड़ता है। कहा गया है कि उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति और पराक्रम जहाँ होते हैं, वहीं भाग्य सहायता करता है। तद्यथा–

उद्यमं साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत्।।[5]

अर्थात् केवल भाग्य भरोसे बैठे न रहकर क्रियाशील होना चाहिए, यह एक अनुभवी व्यक्ति की सी शिक्षा सुभाषित उपर्युक्त पद्य में आसानी से दे रहा है। सुभाषित साहित्य की विषय वस्तु का क्षेत्र व्यापक रहा है। इसमें देवस्तुति से लेकर आम जन–जीवन तक का चित्रण प्राप्त होता है। इसमें जन–जीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण मिलता है। इससे तत्कालीन जन–जीवन और परिस्थितियों का ज्ञान सहज ही हो जाता है। जन–जीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण सुभाषित पद्यों में विद्यमान है, जिसकी प्रस्तुति इस शोधपत्र में अभीष्ट है।

जन–जीवन के विभिन्न पक्ष– आम जनता के जीवन से जुड़े पक्षों में कृषि, वृत्ति एवं व्यवसाय, शिल्प एवं उद्योग, वन और पेड़–पौधे, भौतिक वस्तुऐं, सांस्कृतिक पक्ष, स्त्री की स्थिति, शिक्षा, कुरीतियाँ, रीति–रिवाज, वर्ण, आश्रम, धर्म,

संस्कार, खान–पान इत्यादि पक्ष आते हैं।

ग्रम :–गाँवों में देवी आदि के मन्दिरों में यात्री ठहरा करते हैं। ऐसा ही कोई यात्री देवी के परिसर में छाये छप्पर के नीचे धूनी की आग में ताप कर सो गया, किन्तु जब आग खत्म हो गयी और पैर चलाने से उसका ओढ़ने का कपड़ा भी फट गया तो उसकी नींद टूट गयी और वह ठण्ड से बचने के लिए एक से दूसरे कोने में आने जाने लगा। तद्यथा–

पुण्याग्नौ पूर्णवाञ्छः प्रथममगणितप्लोषदोषः प्रदोषे
पान्थस्तप्त्वा प्रसुप्तः प्रततततनुतष्णे धामनि ग्रामदेव्याः।
उत्कम्पी कर्पटार्धे जरति पदहतिच्छिद्रिते च्छिन्ननिद्रो
वाते वाति प्रकामं हिमकणिनि कणन्कोणतः कोणमेति।।[6]

व्यवसाय– जीवन यापन के लिए व्यवसाय अनिवार्य कर्म है। इसी कर्म को पीढ़ी दर पीढ़ी भी अपनाया जाता रहा है। विभिन्न कार्यों को करने वाले लोगों के अभिधान भी उसी आधार पर प्राप्त होते हैं। जैसे माला बनाने वाला मालाकार, घड़ा (कुम्भ) बनाने वाला कुम्भकार आदि। इनके उल्लेख भी सुभाषित साहित्य में प्राप्त होते हैं। सुभाषितरत्नभाण्डागार में सुवर्णकार, मालाकार, कायस्थ, तैलिक, कवि, शैलूष, कुशीलव पुरोहित, वैद्य आदि का वर्णन मिलता है। स्वर्णकार– सोने के आभूषण बनाने वाले को स्वर्णकार कहते हैं। स्वर्णकार के प्रति स्वर्ण का उपालम्भ निम्नलिखित श्लोक में द्रष्टव्य है–

हे हेमकार परदुःखविचारमूढ किं मां मुहुः क्षिपसि वारशतानि वह्नौ।
सन्दीप्यते मयि सुवर्णगुणातिरेको लाभः परं तव मुखे खलु भस्मपातः।।[7]

तैलिक– तिल से निकलने वाले रस को तैल कहते हैं। अर्थविस्तार के कारण अब सभी पदार्थों के तैल को तेल कहा जाने लगा है। तेल निकालने का कार्य करने वाले को तैलिक या तेली कहते हैं। तेली का उल्लेख सुभाषित साहित्य में दृष्टिगोचर होता है। तद्यथा–

अमी तिलास्तैलिक नूनमेतां स्नेहादवस्थां भवतोपनीताः।
द्वेष्योऽभविष्यद्यदमीषु नूनं तदा न जाने किमिवाकरिष्यः।।[8]

कृषि– भारत प्रारम्भ से ही कृषि प्रधान देश रहा है। ऋग्वेद में भी कहा गया है कि खेती करो– कृषमिति कृषस्व [9]

सुभाषित साहित्य में भी कृषि का वर्णन मिलता है। कई फसल उस समय प्रचलन में थीं। जैसे– उड़द, जौ, महुआ, जंगली जौ, शतपुष्पा (सौंफ), सरसों और धनिया आदि। तद्यथा–

माषीणं मुषितं यवेषु यवसश्यामच्छविः शीर्यते
ग्रामान्ताश्च मधूकधूसरभुवः स्मेरं यवानीवनम्।
पुष्पाढ्याः शतपुष्पिकाः फलभृतः सिद्ध्यन्ति सिद्धार्थकाः
स्निग्धा वास्तुकवास्तवः स्तवकितस्तम्बा च कुस्तुम्बरी।।[10]

सुभाषितों में कृषि की विशेषताएं भी प्राप्त होती हैं। जैसे तिल्ली के फूलों से तो सुगन्ध फैलती है लेकिन जौ की बालियों से नहीं। तद्यथा–

प्रायः सन्त्युपदेशार्हा धीमन्तो न जडाशयाः।
तिलाः कुसुमसौगन्ध्यवाहिनो न यवाः क्वचित्।।[11]

अपनी फसल की रक्षा के लिए हलवाहे अपने खेतों में ही रुक जाया करते हैं। ऐसा ही कोई हलवाहा अपनी पत्नी के साथ जौ के खेत में बनी घास फूस की मढैया में नये धान के पलाल का बिस्तर बनाकर सो रहा है, जिसका शृंगारिक वर्णन द्रष्टव्य है–

लघुनि तष्णकुटीरे क्षेत्रकोणे यवानां
नवकलमपलालस्रस्तरे सोपधाने।
परिहरति सुषुप्तं हालिकद्वन्द्वमारात्
स्तनकलशमहोष्माबद्धरेखस्तुषारः।।[12]

धान की सुगन्ध से हलवाहों के घरों का सराबोर हो जाना और स्त्रियों का मुसल चलाना निम्नलिखित पद्य में जीवन्त रूप में चित्रित हो उठा है–

इदानीमर्घन्ति प्रथमकलमच्छेदमुदिता
नवीनान्धस्थाली परिमलमुचो हालिकगृहाः।
उदञ्चद्दोर्लीला रणितवलयाभिर्युवतिभि–
र्गृहीतप्रोक्षिप्तभ्रमितमसृणोद्गीर्णमुसलाः।।[13]

चूँकि कृषिकार्य ग्राम से सम्बन्धित व्यवसाय है, इसलिए इसकी सुभाषित साहित्य में वर्णित झाँकी को आज के गाँवों में मामूली परिवर्तन के साथ देखा जा सकता है।

दरिद्रता– वर्षा के मौसम में जीर्ण घर में गृहिणी अपने माथे पर पुराना टूटा सूप रखकर कभी सत्तू को पानी से बचाने का प्रयास करती है, कभी भीगने से रोते हुए बच्चों को फटे पुराने कपड़ों से पोंछती है, कभी बिछाने के पलाल को बचाने का प्रयास करती है अर्थात् गृहिणी वर्षा ऋतु में परेशान होती हुई अनेक काम एक साथ करती है। तद्यथा–

सक्तूञ्शोचति सम्प्लुतान्प्रतिकरोत्याक्रन्दतो बालकान्
प्रत्युत्सिञ्चति कर्परेण सलिलं शय्यातृणं रक्षति।
दत्त्वा मूर्ध्नि विशीर्णशूर्पसकलं जीर्णे गृहे व्याकुला

किं तद्यन्न करोति दुःस्थगृहिणी देवे भृशं वर्षति।।[14]

दरिद्रों के लिए वर्षा शत्रु के समान होती है। एक निर्धन परिवार की महिला भारी वर्षा के कारण कितनी पीड़ित होती है, इसका वर्णन सुभाषितरत्नभाण्डागार के एक पद्य में द्रष्टव्य है। घर में वर्षा का पानी घुस आया है। बैठने के पीढे कछुए की तरह तैर रहे हैं, झाड़ू मछली के समान तैरने लगी है। डूबती करछुल साँप जैसी दिखने के कारण बच्चों को डरा रही है। निर्धन गृहिणी टूटे सूप के टुकड़े से अपने को ढक रही है। दीवारें गिरने को हो गयीं। रात्रि के समय निर्धन का गृह भर गये तालाब की तरह हो गया। तद्यथा–

पीठाः कच्छपवत्तरन्ति सलिले सम्मार्जनी मीनवद्
दर्वी सर्पविचेष्टितानि कुरुते सन्त्रासयन्ती शिशून्।
शूर्पार्धावृतमस्तका च गृहिणी भित्तिः प्रपातोन्मुखी
रात्रौ पूर्णतडागसन्निभमभूद्राजन् मदीयं गृहम्।।[15]

गृहस्थाश्रम– सुभाषितसाहित्य में गृहस्थाश्रम की प्रशंसा और निन्दा दोनों प्राप्त होती हैं। यदि घर में आनन्द हो, पुत्र बुद्धिमान् हों, पत्नी कटुभाषिणी न हो, सज्जन मित्र हो, पर्याप्त धन हो, अपनी ही पत्नी में प्रेम हो, सेवक आज्ञाकारी हों, घर में आये अतिथि का आतिथ्य सत्कार होता हो, प्रतिदिन सुन्दर भोजन होता हो, साधुजनों के साथ निरन्तर उठना बैठना हो – ऐसा गृहस्थाश्रम निश्चय ही धन्य है। तद्यथा–

सानन्दं सदनं सुताश्च सुधियः कान्ता न दुर्भाषिणी
सन्मित्रं सुधनं स्वयोषिति रतिश्चाज्ञापराः सेवकाः।
आतिथ्यं शिवपूजनं प्रतिदिनं मृष्टान्नपानं गृहे
साधोः सङ्गमुपासते हि सततं धन्यो गृहस्थाश्रमः।।[16]

स्त्री–दशा– विधवाओं के लिए कड़े नियम कायदे दृष्टिगोचर होते हैं। विधवा महिला सिन्दूर की बिन्दी लगा लेने पर निन्दनीय हो जाती थी। तद्यथा–

रे पुत्र सत्सङ्गमवाप्नुहि त्वमसत्प्रसङ्गं त्वरया विहाय।
धन्योऽपि निन्दां लभते कुसङ्गात्सिन्दूरबिन्दुर्विधवाललाटे।।[17]

स्त्री को दोनों (मायके और ससुराल) पक्ष की सम्मान का प्रतीक माना गया। अरक्षणीय अवस्था में उसके साथ किसी भी प्रकार का अनुचित कृत्य होने पर दोनों पक्षों के लिए शोकप्रद होता था। इसलिए हर परिस्थिति में उसे रक्षणीय माना गया। तद्यथा–

सूक्ष्मेभ्योऽपि प्रसङ्गेभ्यो रक्ष्या नार्यो हि सर्वदा।
द्वयोर्हि कुलयोः शोकमावहेयुररक्षिताः।।[18]

स्त्रियों के बारे में कई विचार यत्र तत्र दृष्टिगोचर होते हैं। जैसे कहा गया

है कि पुरुष की अपेक्षा स्त्री का आहार दुगुना, बुद्धि चौगुनी, कार्यक्षमता छः गुनी और कामवासना आठ गुनी होती है। तद्यथा–

आहारो द्विगुणः स्त्रीणां बुद्धिस्तासां चतुर्गुणा।
षड्गुणो व्यवसायश्च कामश्चाष्टगुणः स्मृतः।।[19]

सुभाषितसाहित्य में कहीं कहीं धर्मशास्त्रों की तरह नियम प्राप्त होते हैं। जैसे एक स्थान पर कहा गया है कि गुरु की पुत्री, मित्र की पत्नी, स्वामी की पत्नी, सेवक की पत्नी के साथ अनाचार करने वाला ब्रह्मघाती के समान माना जाता है। तद्यथा–

गुरोः सुतां मित्रभार्यां स्वामिसेवकगेहिनीम्।
यो गच्छति पुमाँल्लोके तमाहुर्ब्रह्मघातिनम्।।[20]

स्त्रियाँ आभूषणप्रिय होती हैं। वे अपना सौन्दर्य बढ़ाने के लिए केयूर, कटक, माला, कस्तूरीतिलक आदि धारण करती हैं। सुभाषितसाहित्य में स्त्रियों के आभूषणों का वर्णन भी मिलता है। तद्यथा–

केयूरं न करे पदे न कटकं मौलौ न माला पुनः
कस्तूरीतिलकं तथापि तनुते संसारसारश्रियम्।
सर्वाधिक्यमलेखि भालफलके यत्सुभ्रुवो वेधसा
जानीमः किमु तत्र मन्मथमहीपालेन मुद्रा कृता।।[21]

शुद्धि– विभिन्न पदार्थों के दूषित हो जाने पर उनकी शुद्धि के उपाय किये जाते हैं। ये विषय धर्मशास्त्रों में भी मिलते हैं। सुभाषितसाहित्य में शुद्धि के लिए प्राप्त उपाय इस साहित्य को जन–जीवन के निकट सिद्ध करते हैं। कांसे की शुद्धि राख से, ताँबे की नींबू से, नारी की रजस्वला होने से, नदी की तेज बहाव से शुद्धि होती है। तद्यथा–

भस्मना शुध्यते कांस्यं ताम्रमम्लेन शुध्यति।
रजसा शुध्यते नारी नदी वेगेन शुध्यति।।[22]

सुभाषितरत्नभाण्डागार में अन्योक्ति प्रकरण में विभिन्न जन्तु, वृक्ष, वृत्ति व्यवसाय, उपयोगी सामग्री आदि का उल्लेख मिलता है जो जन–जीवन से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित हैं।

पक्षी– सुभाषितरत्न भाण्डागार में गरुड, हंस, मधुकर, कोकिल, चातक, मयूर चक्रवाक, शुक, काक, वक, घूक, खद्योत का वर्णन मिलता है।

पशु– संस्कृत साहित्य में पशुओं का वर्णन विस्तार से मिलता है। सुभाषितरत्न भण्डागार में सिंह, गज, मृग, करभ, रासभ, वृषभ, वानर, शूकर, कुत्ता, बिच्छू, भेक, सियार, साँप, का उल्लेख मिलता है।

जलचर में मछली और कछुए का उल्लेख मिलता है।

वृक्ष– सुभाषितरत्नभाण्डागार में चन्दन, अगरु, चम्पक, बकुल, अशोक, यूथी, मालती, मल्लिका, दमनक, केतकी, पाटला, आम, कटहल, तमाल कदली, द्राक्षा, अनार, नारियल, ताल, भूर्ज, पीपल, बरगद, मधूक, शाल्मलि, नीम, बबूल, खदिर, किंशुक, शाखोट, पीलु, करीर, बिल्व, शालि कुटज, इक्षु, लवंगी, कपास, शण, कण्टकारिका, धतुरा, प्याज, तृण, पान (ताम्बूल), तुम्बी, बाँस, कुन्द, आदि वृक्षों का उल्लेख मिलता है।

धर्म– वैष्णव धर्म का प्रचार–प्रसार सुभाषित साहित्य में पर्याप्त मात्रा में दिखाई देता है। वैष्णव मार्ग में सन्देह करने वाले कुदर्शन कहे गये हैं। प्रमाण स्वरूप राम द्वारा समुद्र पर बाँधे गये सेतु को उपस्थापित किया गया है। तद्यथा–

सन्देहो वैष्णवे मार्गे न कार्योऽन्यैः कुदर्शनैः।
रामप्रभावमद्यापि पयोधौ पश्य सेतुना।। [23]

वर्तमान हिन्दू धर्म के प्रायः सभी देवी–देवों का उल्लेख मिलता है। जैसे परब्रह्म, गणेश, सरस्वती, शिव, पार्वती, कार्तिकेय, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, हरि–हर, त्रिमूर्ति, लक्ष्मी, विष्णु के दस अवतार, सूर्य, चन्द्र, पृथिवी।

इनमें पृथिवी सम्बन्धी पद्य द्रष्टव्य है–

स्वर्गौकोभिरदोनिवासिपुरुषारब्धातिशुद्धाध्वर–
स्वाहाकारवषट्क्रियोत्थममृतं स्वादीय आदीयते।
आम्नायप्रवणैरलङ्कृतिजुषेऽमुष्यै मनुष्यैः शुभै–
र्दिव्यक्षेत्रसरित्पवित्रवपुषे देव्यै पृथिव्यै नमः।। [24]

इस प्रकार स्पष्ट है कि सुभाषितसाहित्य में जन–जीवन से जुड़े विभिन्न पक्षों का उद्घाटित किया गया है। इसमें प्राप्त वर्णन में व्यापकता दिखाई पड़ती है। इसका कारण इन सुभाषितों की रचना करने वाले कवियों का विभिन्न पृष्ठभूमियों से जुड़ा होना है। वैसे तो पूरा साहित्य ही अपनी समकालीन सामाजिक परिस्थितियों का बोध कराता है। किन्तु सुभाषित साहित्य विभिन्न परिवेश के कवियों द्वारा रचित होने से समाज के जन–जीवन के परिदृश्य पर व्यापक रूप से प्रकाश डालता है।

सन्दर्भ–

1. ध्वन्यालोक
2. सदुक्तिकर्णामृत, प्रथमभाग, पृ.8
3. सुभाषितरत्नभाण्डागार, सामान्यप्रकरणम्, स्थानमाहात्म्य, पद्य 5, पृ. 86
4. वही, सुभाषितप्रशंसा, पद्य 1, पृ. 29
5. वही, उद्यमप्रशंसा, पद्य 2, पृ. 82
6. वही, 174, पद्य 4, भाग–2, पृ. 245

7. सुभाषितरत्नभाण्डागार, अन्योक्तिप्रकरणम्, पद्य 23, पृ. 246
8. वही, पद्य 42, पृ. 246
9. ऋग्वेद 10–34
10. सदुक्तिकर्णामृतम्, शृंगारप्रवाह, 177, पद्य 1, भाग–2, पृ. 250
11. सुभाषितरत्नभाण्डागार, राजप्रकरणम्, सामान्यनीतिः, पद्य 670, पृ. 168
12. वही, 173, पद्य 1, भाग–2, पृ. 242
13. वही, 173, पद्य 2, भाग–2, पृ. 242
14. वही, उच्चावचप्रवाह, 49, पद्य 5, भाग–3, पृ. 240
15. सुभाषितरत्नभाण्डागार, सामान्यप्रकरणम्, दरिद्रनिन्दा, पद्य 78, पृ. 68
16. वही, सामान्यप्रकरणम्, गृहस्थाश्रमप्रशंसा, पद्य 4, पृ. 89
17. वही, चित्रप्रकरणम्, समस्याख्यानम्, पद्य 34, पृ. 182
18. वही, राजप्रकरणम्, स्त्रियः, पद्य 81, पृ. 144
19. वही, राजप्रकरणम्, सामान्यनीतिः, पद्य 409, पृ. 162
20. वही, राजप्रकरणम्, सामान्यनीतिः, पद्य 530, पृ. 165
21. वही, नवरसप्रकरणम्, शृंगाररसनिर्देश, तिलक, पद्य 51, पृ. 258
22. वही, संकीर्णप्रकरणम्, पद्य 503, पृ. 389
23. वही, राजप्रकरणम्, सामान्यनीतिः, पद्य 607, पृ. 166
24. वही, मंगलाचारणप्रकरणम्, पृथिवी, पद्य 1, पृ. 28

सन्दर्भग्रन्थ–

(1) सुभाषितरत्नभाण्डागार, नारायणराम आचार्य काव्यतीर्थ, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली, पुनर्मुद्रित सं. 2007

(2) सदुक्तिकर्णामृतम् भाग–1, श्रीधरदास / प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, प्रथम संस्करण 2005

(3) सदुक्तिकर्णामृतम् भाग–2, श्रीधरदास / प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, प्रथम संस्करण 2006

(4) सदुक्तिकर्णामृतम् भाग–3, श्रीधरदास / प्रो. ओमप्रकाश पाण्डेय, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, प्रथम संस्करण 2008

(5) ध्वन्यालोक, आनन्दवर्धन / आचार्य जगन्नाथ पाठक, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2009

(6) ऋग्वेद भाग 4, / सायण, मैक्समूल्लर, चौखम्बा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी,1966